③ Class - VII
Sub. Sanskrit

पाठ - 1
सुभाषितानि
संस्कृत में श्लोक व अर्थ याद कीजिए

1) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

2) सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

अर्थ- धरती पर तीन ① रत्न हैं जल, अन्न और सुन्दर वचन। लेकिन मूर्खों के द्वारा पत्थर के टुकड़ों में रत्न का नाम किया जाता है।

अर्थ सत्य से ② पृथ्वी धारण किया जाता है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य से पवन भी बहती है, और सभी में सत्य स्थित है।

व्याकरण
वर्णविचार :
संस्कृत में 48 वर्णों का प्रयोग होता है।
मुख्यतया इसके तीन भेद हैं।
1) स्वर (2) व्यञ्जन (3) अयोगवाह

(5)

स्वर :- 13

ह्रस्व स्वर - 5
अ, इ, उ, ऋ, लृ

दीर्घ स्वर - 8
आ, ई, ऊ, ॠ, ए
ऐ ओ औ

व्यञ्जन दो प्रकार के होते हैं।

1) वर्गीय व्यञ्जन
2) अवर्गीय व्यञ्जन

वर्गीय व्यञ्जन - 25
क्, ख्, ग्, घ्, ङ्
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
त्, थ्, द्, ध्, न्
प्, फ्, ब्, भ्, म्

अवर्गीय व्यञ्जन - 8

अन्तस्था :- 4
ऊष्माव:

आयोगवाहौ - 2
1) अनुस्वार : (ं)
2) विसर्ग : (ः)